DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-9,
PERSONALITY:DEFINITION

LECTURE-31

व्यक्तित्व की परिभाषा

DEFINITION OF PERSONALITY

व्यक्तित्व का अंग्रेजी अनुवाद "PERSONALITY" है जो लैटिन शब्द "परसोना" (PERSONA) से बना है |जिसका अर्थ नकाब (MASK) से होता है और जिसे नायक नाटक करते समय पहनते है | इस शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए व्यक्तित्व को बाहरी वेश-भूषा तथा दिखावे के आधार पर परिभाषित किया गया है | जिस व्यक्ति का बाहरी दिखावा भड़कीला होता था ,उसका व्यक्तित्व उतना ही अच्छा समझा जाता था तथा जिस व्यक्ति का बाहरी दिखावा साधारण होता था उसका व्यक्तित्व उतना अच्छा नहीं समझा जाता था परन्तु ऐसी परिभाषाओं को तुरंत ही अवैज्ञानिक

घोषित किया गया और उसके बाद धीरे-धीरे एक-एक करके विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व की अनेको परिभाषाएँ दी |जिनका विश्लेषण करने के बाद आल्लपोर्ट(1937) में अपनी ओर से व्यक्तित्व की परिभाषा दी जो अनेक मनोवैज्ञानिकों द्वारा मान्य है इस प्रकार है –

आल्लपोर्ट(1937) के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व सामायोजन को निर्धारित करता है"| आल्लपोर्ट की इस परिभाषा में व्यक्तित्व के भीतरी गुणों तथा बाहरी गुण यानी व्यवहार दोनों को सम्मिलित किया गया है ,परन्तु उन्होंने व्यक्तित्व के भीतरी गुणों पर तुलनात्मक रूप से अधिक बल डाला है |

आइजेंक (1952) के अनुसार "व्यक्तित्व के चरित्र ,चित्तप्रकृति,ज्ञान शक्ति तथा शारीरिक गठन का करीब-करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संघठन है जो वातावरण में उसके अपूर्ण सामायोजन का निर्धारण करता है |

चाईल्ड(1968) के अनुसार , "व्यक्तित्व से तात्पर्य कमोवेश स्थायी आतंरिक कारकों से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार को

एक समय से दूसरे समय में संगत बनाता तथा तुल्य परिस्थिति में अन्य लोगों के व्यवहार से अलग करता है" |

वाल्टर मिसकेल(1981) के अनुसार , " प्रायः व्यक्तित्व से तात्पर्य व्यवहार के उस विशिष्ट पैटर्न (जिसमे चिंतन एवं संवेग की सम्मिलित है |) से होता है प्रत्येक व्यक्ति के जिन्दगी कि परिस्थितियों के साथ होने वाले समायोजन का निर्धारण करता है" |

बेरोन (2006) के अनुसार , "व्यक्तियों के अनूठे एवं संवेगों ,चिन्तनों तथा व्यवहारों के सापेक्ष रूप से स्थिर पैटर्न के रूप में व्यक्तित्व को सामान्यतः परिभाषित किया जाता है" | ऊपर के परिभाषाओं का विश्लेषण करने से व्यक्तित्व का अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है इसका एक संयुक्त विश्लेषण इस प्रकार है –

1. मनोशारीरिक तंत्र – व्यक्तित्व एक ऐसा तंत्र है जिसके मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही पक्ष होते है | यह तंत्र ऐसे तत्वों का एक गठन होता है जो आस-पास में अन्तः क्रिया करते है |इस तंत्र के मुख्य तत्व शील-गुण (trait), संवेग (emotion), आदत (habit), ज्ञानशील(intellect),चित्तप्रकृति (temperament),चरित्र (character),अभिप्रेरक (motives) आदि है जो सभी मानसिक गुण है परन्तु इस सबका

आधार शारीरिक अर्थात व्यक्तित्व के ग्रंथियें प्रक्रियाएँ एवं तंत्रिकीय प्रक्रियाएँ है |इसका स्पष्ट मतलब यह हुआ की व्यक्तित्व न तो पूर्णतः मानसिक है और ना पूर्णतः शारीरिक ही | व्यक्तित्व इन दोनों तरह के पक्षों का मिश्रण है |

2. गत्यात्मक संघटन – गत्यात्मक संघटन से तात्पर्य यह होता है की मनोशारीरिक तंत्र के भिन्न-भिन्न तत्व जैसे शीलगुण आदत आदि एक-दूसरे से इस तरह सम्बंधित होकर संगठित है की उन्हें एक-दुसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता है |इस संगठन में परिवर्तन संभवतः है | यही कारण है की उसे एक गत्यात्मक संगठन कहा गया है |इस तरह से गत्यात्मक संगठन से स्पष्ट मतलब यह है की व्यक्तित्व के शील-गुण या अन्य तत्व आपस में इस तरह से संगठित होते है की उनमे परिवर्तन भी होते रहते है |उदाहरण स्वरूप कोई व्यक्ति नौकरी में जाने के पहले ईमानदार , उत्तरदायी तथा समयनिष्ठ हो सकता है परन्तु नौकरी मिलने के कुछ वर्षो बाद उसमे उत्तरदायित्व तथा समयनिष्ठता का शील-गुण ज्यों-का-त्यों हो सकता है |परन्तु संभव है की उसमे ईमानदारी का गुण बदल कर बईमानी का गुण विकसित हो जाए | इस उदहारण में पहले

के तीन गुणों के संगठन में नौकरी मिलने के बाद एक परिवर्तन दिखलाया गया है |

3. संगतता – व्यक्तित्व में व्यक्ति का व्यवहार एक समय से दूसरे समय में संगत होता है |संगतता से मतलब यह होता है की व्यक्ति का व्यवहार दो भिन्न अवसरों पर भी लग-भग एक समान होता है | इस कारक पर चाईल्ड के परिभाषा में प्रत्यक्ष रूप से बल डाला गया है | व्यक्ति के व्यवहार में इसी संगतता के आधार पर उसमे अमुक शील-गुण के होने का अनुमान लगाया जाता है |
4. वातावरण में अपूर्व समायोजन का निर्धारण --- प्रत्येक व्यक्ति में मनोशारीरिक गुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन पाया जाता है की उसका व्यवहार वातावरण में अपने अपने ढंग का अपूर्व होता है | वातावरण समान होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार , विचार ,होने वाला संवेग आदि अपूर्व होता है जिसके कारण उस वातावरण के साथ समायोजन करने का ढंग भी प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होता है | आइजेंक ,आल्लपोर्ट,चाईल्ड तथा मिसकेल ने इस पक्ष पर समान रूप से अपनी-अपनी परिभाषाओं में बल डाला है |

निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है की व्यक्ति में भिन्न-भिन्न शीलगुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपने ढंग का अर्थात अपूर्व होता है|